नील आर्मस्ट्रांग से
आप क्या पूछना चाहेंगे?

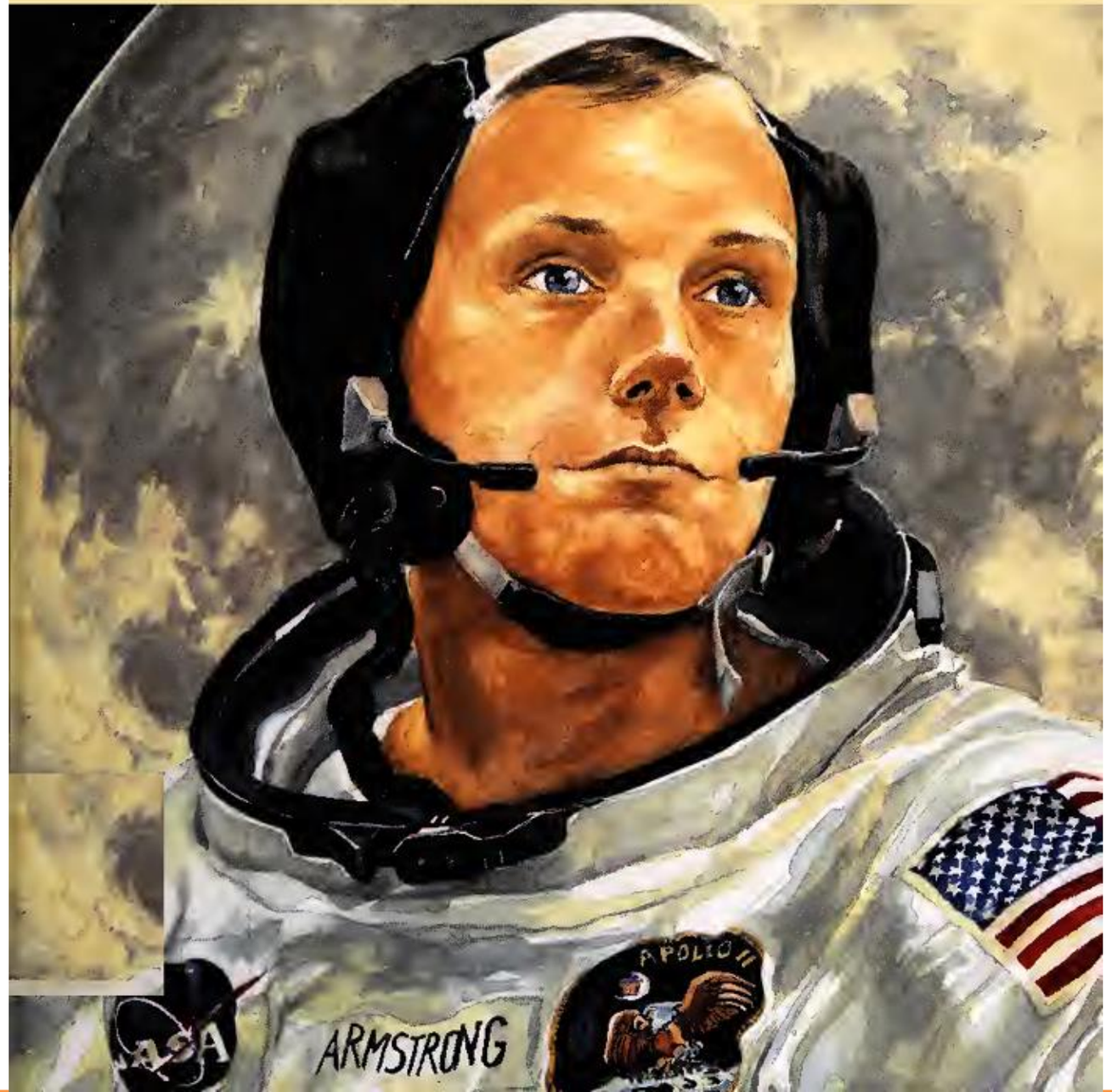

नील आर्मस्ट्रांग से
आप क्या पूछना चाहेंगे?

लेखक: अनीता गनेरी

हिंदी : योगेश

विषय-सूची

आप क्या करते हैं?

आपका जन्म कहाँ हुआ था?

स्कूल के दिनों में आप कैसे थे ?

आपकी उम्र क्या थी, जब आपने उड़ान भरना शुरू किया ?

आप एक अंतरिक्ष यात्री कैसे बने ?

आप चन्द्रमा तक कैसे पहुंचे ?

आपने चाँद पर पहला कदम कब रखा ?

आपने चाँद पर क्या किया ?

आप अंतरिक्ष में कितने समय रहे ?

जब आप पृथ्वी पर लौटे तब क्या हुआ ?

क्या आप कभी दोबारा अंतरिक्ष में गए?

सैटर्न ५

कुछ महत्वपूर्ण तारीखें

आप क्या करते हैं ?

"मैं एक अमेरिकन अंतरिक्ष यात्री और एक विमान-चालक हूँ।"

२० जुलाई १९६९ को अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग चन्द्रमा पर कदम रखने वाले पहले व्यक्ति बन गए। विश्व भर में लाखों लोगों ने टेलीविज़न पर उन्हें देखा, जब वे अपने चंद्रयान से नीचे उतरे और चाँद की सतह पर उन्होंने अपना पहला कदम रखा। "एक इंसान के लिए यह एक छोटा सा कदम है, लेकिन मानव-जाति के लिए एक बहुत बड़ी छलांग है", उन्होंने कहा।

१९५७ में सोवियत रूस ने पहला मानव-निर्मित उपग्रह "स्पुतनिक १" अंतरिक्ष में भेजा। फिर १९६१ में यूरी गगारिन नाम का एक रूसी अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में जाने वाले पहले व्यक्ति बने। इस प्रकार अंतरिक्ष की इस दौड़ में सोवियत रूस अपने प्रतिद्वंदी अमेरिका से बहुत आगे निकल गया। फिर अमेरिका ने भी इस दौड़ को जीतने का निश्चय किया। मई १९६१ में राष्ट्रपति जॉन कैनेडी ने ऐलान कर दिया कि १९७० तक अमेरिका मानव को चाँद पर पहुँचाने का कार्य कर दिखायेगा।

अपोलो ११ का चंद्र-अभियान एक सर्वाधिक रोमांचक अंतरिक्ष यात्रा थी। और सबसे अधिक खतरनाक भी। कोई नहीं जानता था कि चन्द्रमा पर पहुँच कर इन अंतरिक्ष यात्रियों को किन हालात का सामना करना पड़ेगा, और वे वापस धरती पर आ भी पाएंगे या नहीं।

आपका जन्म कहाँ हुआ था ?

"मेरा जन्म वापाकोनेटा, ओहायो में
अपने दादा-दादी के फार्म पर हुआ था।"

नील आर्मस्ट्रांग का जन्म ५ अगस्त १९३० को वापाकोनेटा, ओहायो के निकट स्थित अपने दादा-दादी के फार्म पर हुआ था। उसके माता-पिता का नाम स्टेफेन और विओला आर्मस्ट्रांग थां। नील की एक छोटी बहन थी, जून, और एक छोटा भाई, डीन।

स्टेफेन आर्मस्ट्रांग ओहायो के सरकारी कार्यालय में लेखाकार पद पर नियुक्त थे। उनके पद के कारण उनके परिवार को अक्सर एक से दूसरे नगर स्थानांतरित होना पड़ता था।

बहुत छोटी आयु से ही नील को विमानों और उड्डयन में बहुत रूचि थी। जब वह केवल दो वर्ष के थे, उनके माता-पिता उन्हें क्लीवलैंड के नागरिक हवाई अड्डे पर ले गए, जहाँ उसने विमानों को उड़ान भरते और उतरते हुए देखा। यह देख कर वह इतना मंत्रमुग्ध हो गया, कि वह घर वापस जाने को तैयार न था।

विमान में यात्रा करने का अवसर नील को इसके चार वर्ष बाद मिला। एक रविवार की सुबह, एक विमान चालक, जो स्थानीय निवासियों को विमान यात्रा कराने आया था, उसे उड़ान पर ले गया।

आपका स्कूल का अनुभव कैसा था?

"मैं बहुत मेहनती था, और अच्छा प्रदर्शन करना चाहता था।"

नील आर्मस्ट्रांग ने स्कूल शुरू करने से पहले ही पढ़ना सीख लिया था। प्राथमिक विद्यालय में वह बहुत ही प्रतिभावान विद्यार्थी थे। नील को स्कूल जाना और अपने दोस्तों के साथ फूटबाल खेलना बहुत अच्छा लगता था। उन्होंने स्कॉउटिंग में भी भाग लिया। लेकिन एक काम था जो उन्हें इन सब कामों से अधिक अच्छा लगता था, और वह था वायुयानों के मॉडल बनाना।

नील ने जब अपना पहला वायुयान का मॉडल बनाया, वह केवल आठ वर्ष के थे। और फिर तुरंत ही वह दूसरा मॉडल बनाने में जुट गए। दस वर्ष के होने तक नील ने अपनी पहली अंशकालिक नौकरी भी शुरू कर दी। उसे नज़दीकी कब्रिस्तान में घास काटने की मशीन चलने का काम मिल गया। वह अपने नए और बड़े मॉडल के वायुयान बनाने के लिए पर्याप्त पैसे एकत्र करना चाहता था। उसके बाद उसने एक बेकरी में काम किया, और उस पैसे से उसने बैरीटोन नामक वाद्य ख़रीदा, जिसका उपयोग उसने स्कूल के बैंड में बजाने के लिए किया।

वापाकोनेटा में हाई स्कूल में नील ने बहुत लगन से पढाई की, ख़ासकर विज्ञान और गणित में। उनमें नेतृत्व की प्रतिभा प्राकृतिक रूप से ही थी, और अन्य छात्र अक्सर उसके पास सहायता के लिए आते थे। नील ने स्कूल के बैंड में बजाना और छोटे-मोटे काम करना जारी रखा। स्कूल के साथ ये नौकरियां करना थोड़ा थकानेवाला तो था, लेकिन नील ने इसकी परवाह नहीं की। आखिर यह पैसा उसके विमान चलाने के प्रशिक्षण के लिए काम आने वाला था।

आपकी उम्र क्या थी, जब आपने विमान उड़ाना शुरू कर दिया?

"मैं सोलह वर्ष का था जब मैंने पायलट बनने का प्रशिक्षण पूर्ण कर लिया था।"

५ अगस्त १९४६ को नील ने अपना जन्मदिन पायलट का लाइसेंस पाकर मनाया। विमान में उड़ान भरना उसके लिए एक सपना पूरा होने के समान था। लेकिन नील की इसमें भी बहुत जिज्ञासा थी कि विमान आखिर काम कैसे करते हैं। इसलिए हाई स्कूल से उत्तीर्ण होकर वह परड्यू विश्वविद्यालय में वैमानिक इंजीनियरिंग की पढाई करने चला गया।

लेकिन डेढ़ वर्ष बाद ही जल सेना ने उसे बुला भेजा। वे उसे कोरिया युद्ध के लिए लड़ाकू विमान चलाने का प्रशिक्षण देना चाहते थे। तब उसकी आयु केवल २० वर्ष की थी, और वह नौसेना का सबसे कम उम्र का लड़ाकू विमान चालक था।

नील की वैमानिक कार्य कुशलता और बहादुरी की चरम सीमा इस युद्ध में देखने को मिली। एक बार जब उसका विमान शत्रु की गोलीबारी से क्षतिग्रस्त गया तो उसे पैराशूट द्वारा जहाज से कूद कर अपनी जान बचानी पड़ी।

१९५२ में नील अपनी पढाई पूरी करने परड्यू लौट गया। तीन वर्ष बाद उसने नए विमानों की परीक्षण उड़ानों का कार्य ले लिया। सबसे नवीनतम विमान, जिसे उड़ाने का अवसर उसे मिला, वह था X-15 राकेट विमान। यह अन्य सभी विमानों से अधिक तेज़ और अधिक ऊँचाई पर उड़ सकता था, और एक अंतरिक्ष यान से शायद कुछ ही कम था।

आप एक अंतरिक्ष यात्री कैसे बने?

"जैमिनी ८ मिशन के लिए नासा ने मेरा चुनाव किया"

१९६० के दशक में जैमिनी परियोजना का आरम्भ हुआ, जिसके अंतर्गत अंतरिक्ष उड़ानों की एक श्रंखला प्रारम्भ की गई। नील ने इसमें अंतरिक्ष यात्री बनने के लिए आवेदन दिया, जिसे स्वीकार कर लिया गया। उन्होंने १९६६ में जैमिनी ८ यान पर अपनी पहली अंतरिक्ष यात्रा की। इस यात्रा में इस यान को अंतरिक्ष में एक अन्य राकेट से जोड़ने का सफल प्रयोग किया गया। शुरू में सब कुछ ठीक हो रहा था। लेकिन तभी जैमिनी ८ के एक प्रक्षेपक इंजन ने काम करना बंद कर दिया, और यान काबू से बाहर होकर तेज़ी से घूमने लगा। नील ने प्रयत्न करके किसी तरह यान पर नियंत्रण कायम किया, और एक बड़ा हादसा होने से बच गया। लेकिन यह एक बाल-बाल बचने वाली घटना थी।

उसकी त्वरित सोच और निपुणता के लिए नील की काफी प्रशंसा हुई। जब अमेरिकन अंतरिक्ष संस्थान "नासा" ने अपोलो की उड़ानों के लिए अंतरिक्ष यात्रियों की घोषणा की, तो नील को अपोलो-११ का कमांडर घोषित किया गया। यह चन्द्रमा पर उतरने वाला पहला मिशन था। नील के अलावा इस मिशन के दूसरे यात्री थे एडविन "बज़्" एल्ड्रिन, और माइकल कॉलिंस।

इन यात्रियों को एक कठिन प्रशिक्षण कार्यक्रम से गुज़ारना पड़ा। शारीरिक और मानसिक रूप से उन्हें एकदम चुस्त-दुरुस्त रहना था, और मिशन के बारे में पूरी जानकारी भली-भांति सीखनी थी। और सबसे महत्वपूर्ण, उन्हें यह सीखना था कि किसी भी आपात स्थिति में क्या करना है। नील के मन में मिशन को लेकर बिलकुल भी भय या शंका नहीं थी, लेकिन उसने कहा, "मैं ईमानदारी से कहता हूँ कि मेरी हार्दिक इच्छा यही थी कि चन्द्रमा से लौट कर आने वाला मैं पहला व्यक्ति बनूँ।"

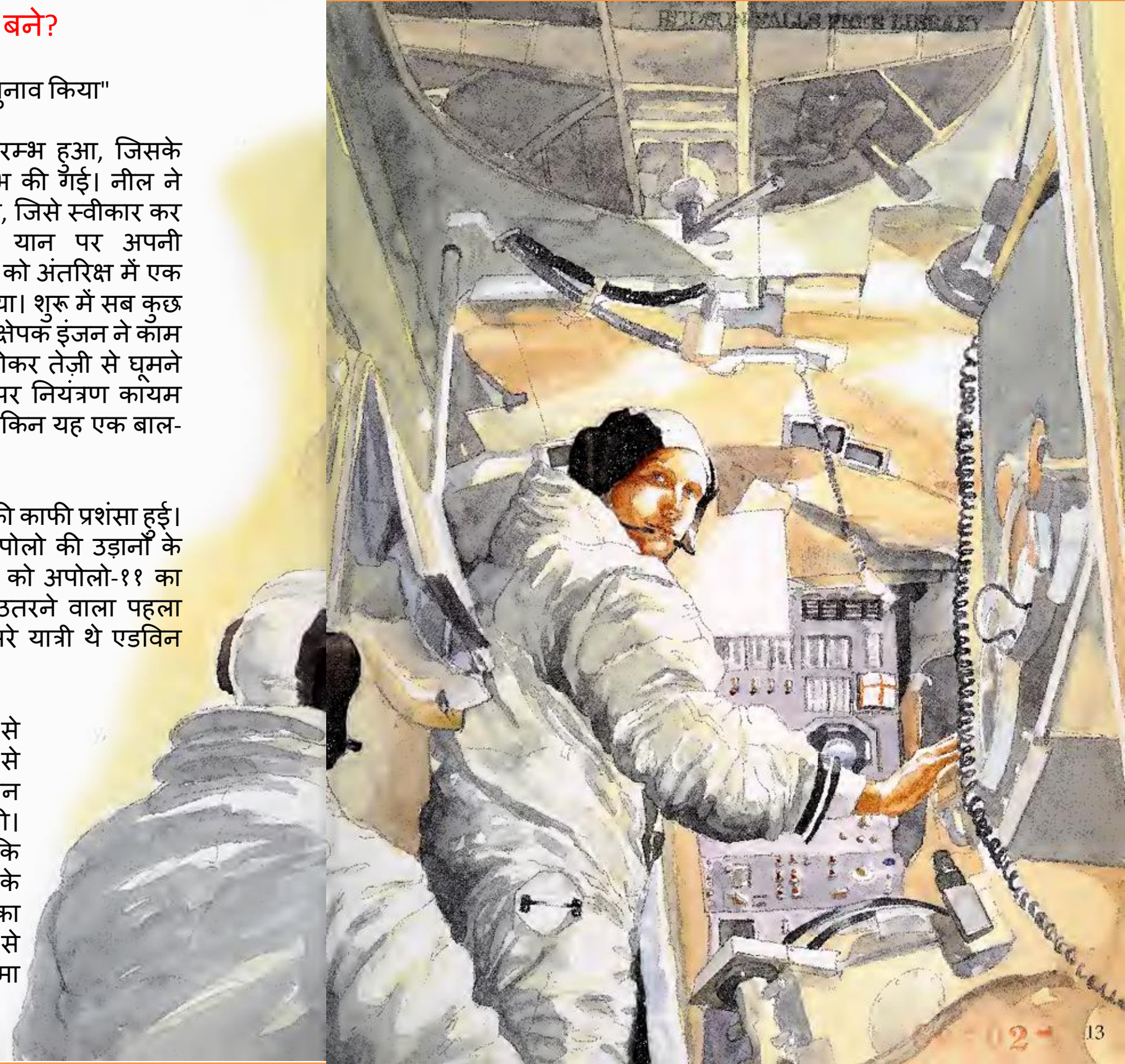

आप चन्द्रमा पर कैसे पहुंचे ?

"हम सैटर्न - ५ अंतरिक्ष रॉकेट के द्वारा वहां पहुंचे।"

१६ जुलाई १९६९ को आर्मस्ट्रांग, एल्ड्रिन और कॉलिंस बहुत सवेरे उठ गए, और उन्होंने अंडे और गोश्त का नाश्ता किया। फिर उन्होंने अपने स्पेस-सूट पहने और उन्हें एक गाड़ी से केप कैनेडी, फ्लोरिडा ले जाया गया। वहां लांच पैड पर विशालकाय सैटर्न - ५ राकेट तैयार खड़ा था, जो उन्हें अंतरिक्ष में ले जाने वाला था। और अपोलो - ११ अंतरिक्ष यान उस राकेट के ऊपर सवार था।

छः बज कर बावन मिनट पर आर्मस्ट्रांग अपोलो ११ में दाखिल हुए, और उनके पीछे पीछे थे एल्ड्रिन और कॉलिन्स। मिशन कण्ट्रोल ने उलटी गिनती शुरू कर दी थी। "बारह, ग्यारह, दस, नौ..... " और फिर सैटर्न ५ के विशालकाय इंजन आग उगलने लगे। " छः , पांच, चार, तीन, दो, एक, शून्य, सभी इंजन चालू हैं।" धरती हिलने सी लगी, और एक बहरी कर देने वाली दहाड़ के साथ सैटर्न ५ तेज़ी से हवा में ऊपर की ओर उठने लगा। इस समय ठीक ९ बज कर ३२ मिनट हुए थे। "उड़ान प्रारम्भ हो चुकी है, अपोलो ११ अपनी यात्रा पर चल पड़ा है।"

उड़ान भरने के कुछ ही मिनट बाद राकेट के पहली और दूसरी अवस्था के इंजन अपना काम पूरा करके यान से अलग होकर गिर चुके थे। ९ बज कर ४४ मिनट पर तीसरी अवस्था के इंजन ने आग उगलना शुरू किया, और यान को पृथ्वी की परिक्रमा करने वाली कक्षा में में प्रक्षेपित पर दिया। लगभग ढाई घंटे बाद इन इंजनों ने फिर से अपना काम शुरू किया, और अपोलो ११ की गति को बढ़ा कर २४००० किलोमीटर प्रति घंटा तक पहुंचा दिया। अब ये अंतरिक्ष यात्री चन्द्रमा की ओर अग्रसर हो चले थे।

आपने चन्द्रमा पर अपना पहला कदम कब रखा ?

"२० जुलाई १९६९ को ठीक १० बज कर ५६ मिनट पर "

पूरे तीन दिन तक अंतरिक्ष में यात्री करने के बाद अपोलो ११ चन्द्रमा की परिक्रमा वाली कक्षा में स्थापित हो गया। अगले दिन, आर्मस्ट्रांग और एल्ड्रिन ने अपने स्पेस सूट पहने और "ईगल" नामक नन्हे यान में दाखिल हो गए, जिसे चन्द्रमा की सतह पर उतरना था। एक बज कर ४६ मिनट पर ईगल ने अपने इस अवरोहण की शुरुआत की। सब कुछ ठीक प्रकार होता गया, और ईगल चन्द्रमा के "सी ऑफ़ ट्रैंक्विलिटी", यानी शांति सागर नामक स्थान पर शानदार तरीके से उतरने में सफल हुआ। चन्द्रमा से पहले शब्द जो पृथ्वी को भेजे गए, वे थे, "ह्यूस्टन। मैं ट्रैंक्विलिटी बेस से बोल रहा हूँ। ईगल उतर चुकी है।"

आर्मस्ट्रांग और एल्ड्रिन ने भोजन किया, फिर अपने हेलमेट लगाए, दस्ताने पहने, और अपने जीवन-रक्षक संयंत्र से लैस हो गए। चन्द्रमा पर न तो वायु है, और न ही पानी, और तापमान शून्य से लेकर १२० डिग्री तक जा सकता है। उनकी पीठ पर लदे थैले में ऑक्सीजन संयंत्र था, तापमान नियंत्रण प्रणाली, और यान से बातचीत के लिए रेडियो भी। इनके बिना चन्द्रमा की सतह पर जीवित रहना असंभव था। अंततः उन्होंने ईगल का द्वार खोला, और नील ने एक सीढ़ी के सहारे नीचे उतरना प्रारम्भ किया।

चन्द्रमा पर पहुँच कर आपने क्या किया ?

"हमने चन्द्रमा की सतह से पत्थरों के नमूने एकत्र किये।"

तुरंत बाद ही बज़ एल्ड्रिन भी ईगल से उतर कर नील के पास आ पहुंचे। उनके स्पेस सूट काफी बड़े और वज़नी थे, लेकिन चन्द्रमा पर गुरुत्वाकर्षण बहुत कम था। इसलिए वे आराम से चल-फिर पा रहे थे। चन्द्रमा की सतह रेतीली मगर मज़बूत थी।

दोनों ने मिल कर वहां एक कैमरा लगाया और अपना काम शुरू कर दिया। उनके पास कुछ ही घंटों का समय था, ऑक्सीजन समाप्त होने से पहले। उन्होंने चन्द्रमा के पत्थरों और मिटटी के नमूने एकत्र किये, और कई वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए उपकरण स्थापित किये। इन उपकरणों के द्वारा वैज्ञानिक पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी अधिक शुद्धता से नाप पाएंगे, और चन्द्रमा की सतह का सम्यक रूप से अध्ययन कर पाएंगे। आर्मस्ट्रांग और एल्ड्रिन ने वहां अमेरिका का एक झंडा भी स्थापित किया। क्योंकि चंद्रमा पर हवा तो होती नहीं, इसलिए उन्होंने उसे एक तार की सहायता से फहराती हुई स्थिति में रखा। इसी समय उनके पास अमेरिकी राष्ट्रपति का टेलीफोन भी आया।

जब दोनों ईगल में वापस आये, तो पाया कि इंजन को चलाने वाला स्विच टूटा हुआ है। अगर वे इसे ठीक न कर पाए तो वे मुसीबत में होंगे। उन्होंने अपना दिमाग़ चलाया, और टूटे स्विच की जगह एक पेन को फंसा दिया। और इस तरकीब से इंजन चल पड़ा। यान का ऊपरी आधा हिस्सा उठ चला, लेकिन नीचे का आधा हिस्सा चन्द्रमा की सतह पर ही छोड़ दिया गया।

आप कितने समय तक अंतरिक्ष में रहे ?

"हम आठ दिन तक वहां रहे।"

चन्द्रमा से वापस चलने के ठीक तीन घंटे बाद ईगल कमांड मॉड्यूल कोलंबिया तक वापस जा पहुंचा, जहाँ तीसरे अंतरिक्ष यात्री माइकल कॉलिंस उन दोनों की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके कोलंबिया में प्रवेश करने के बाद, ईगल को अंतरिक्ष में लावारिस छोड़ लिया गया, और वह चन्द्रमा की सतह पर गिर कर ध्वस्त हो गया। फिर तीनों ने पृथ्वी की ओर अपनी वापसी यात्रा प्रारम्भ की। जब वे पृथ्वी के निकट पहुंचे तो सर्विस मॉड्यूल को मुख्य यान से अलग करके अंतरिक्ष में ही छोड़ दिया गया।

२४ जुलाई को, पृथ्वी से चलने के बाद ठीक आठवें दिन, कोलंबिया के पैराशूट खुले, और वह आहिस्ता से प्रशांत महासागर में आ गिरा। विशेष सुरक्षा पोषक पहने गोताखोरों ने जाकर यान का द्वार खोला, और अंतरिक्ष यात्रियों को एक हेलीकाप्टर के द्वारा बचाव पोत पर ले जाया गया। चन्द्रमा की पहली यात्रा पूरी तरह सफल रही थी।

वैज्ञानिकों को आशंका थी कि कहीं ये यात्री अपने साथ चन्द्रमा से कोई खतरनाक जीवाणु न ले आये हों, जिनसे पृथ्वी पर नई बीमारियां फैलने की सम्भावना हो। इसलिए तीनों को अगले १८ दिन ह्यूस्टन की एक प्रयोगशाला में एकांत में बिताने पड़े। उन्होंने इस समय का उपयोग नासा के लोगों से अपनी यात्रा के अनुभव साझा करने में व्यतीत किया।

जब डॉक्टर आश्वस्त हो गए कि वे कोई नए कीटाणु लेकर नहीं आये हैं, तभी उन्हें समाज में वापस जाने और अपने परिवारों से मिलने की अनुमति दी गई।

जब आप पृथ्वी पर वापस आये, फिर क्या हुआ ?

"वह बहुत ही अद्भुत अनुभव था।
हमारा स्वागत महानायकों की तरह किया गया। "

अपने चंद्र अभियान के कारण ,आर्मस्ट्रांग, एल्ड्रिन और कॉलिंस जग-प्रसिद्ध हो गए। हर कोई उन्हें देखना चाहता था, और उनके अनुभवों के बारे में सुनना चाहता था।

१३ अगस्त को तीनों अपनी पत्नियों सहित एक ही दिन में अमेरिका के तीन शहरों के तूफानी दौरे पर गए। उन्होंने शुरुआत न्यूयॉर्क से की, फिर वे शिकागो गए, और फिर लॉस एंजेलेस। उन्हें "प्रेसिडेंशिअल मैडल ऑफ़ फ्रीडम" नामक राष्ट्रपति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया, जो कि अमेरिका का सबसे उच्च नागरिक सम्मान है।

नासा ने उनके वैश्विक दौरे का भी प्रबंध किया। ४५ दिनों में उन्होंने २४ देशों के २७ नगरों का भ्रमण किया। प्रत्येक स्थान पर हज़ारों लोगों ने सड़क के दोनों ओर एकत्र होकर उनका अभिवादन किया। इस दौरे की समाप्ति के बाद नील ने नासा के मुख्यालय वाशिंगटन डी सी में काम करना शुरू कर दिया। साथ ही उन्होंने अंतरिक्ष और वैमानिक इंजीनियरिंग की पढाई भी जारी रखी।

नील आर्मस्ट्रांग एक एकांतप्रिय व्यक्ति थे, और उन्हें जग-प्रसिद्धि और कीर्ति में कोई रूचि न थी। उन्हें समाचार पत्रों को साक्षात्कार आदि देना पसंद नहीं था, और उन्होंने विभिन्न उत्पादों के विज्ञापनों की अधिकांश पेशकशों को भी ठुकरा दिया। वह एक साधारण लोगों की तरह ही एक व्यक्तिगत जीवन जीना चाहते थे। लेकिन चन्द्रमा पर उतरने वाले प्रथम व्यक्ति होने के नाते यह लगभग असंभव ही था।

क्या आप कभी दोबारा अंतरिक्ष में गए ?

"नहीं, लेकिन अक्सर मैं सोचता था कि काश मैं फिर वहां जा पाता।"

१९७१ में नील ने नासा से त्यागपत्र दे दिया, और सिनसिनाटी विश्वविद्यालय में वैमानिक इंजीनियरिंग पढ़ाने लगे। उन्होंने इस बात का भी अध्ययन किया कि अंतरिक्ष के लिए विकसित तकनीकी का पृथ्वी पर उपयोग कैसे किया जाये। १९७६ में वह उस दल के प्रमुख थे जो हृदय की शल्य चिकित्सा में प्रयोग के लिए एक पंप का विकास कर रहा था। यह पंप अपोलो में इस्तेमाल किये गए स्पेस सूट में लगे पंप पर आधारित था।

नील दोबारा कभी अंतरिक्ष में वापस नहीं गए। उन्होंने ओहायो में एक फार्म खरीद लिया और अपने परिवार के साथ वहां शांति से रहने लगे। वे न तो कोई इंटरव्यू देते थे, और आम लोगों के बीच भी बहुत कम जाते थे। १९७९ में उन्होंने विश्विद्यालय के अध्यापन कार्य से भी त्यागपत्र दे दिया। इस बीच अपोलो कार्यक्रम चलता रहा, और छह बार और चंद्रमा की यात्रा संपन्न की गई। अंतरिक्ष के अनुसंधान में अगला बड़ा कदम १९७० के दशक में तब उठा जब रूस और अमेरिका ने अंतरिक्ष में अपने अपने स्पेस स्टेशन स्थापित किये।

नील की अंतरिक्ष में रूचि बरक़रार थी, और उन्होंने इक्कीसवीं सदी के लिए अंतरिक्ष कार्यक्रम की योजनाएं बनाने में योगदान दिया। यह और बात है कि ये योजनाएं कभी पूर्ण न हो सकीं। २८ जनवरी १९८६ को स्पेस शटल चैलेंजर पृथ्वी से उड़ान भरने के कुछ क्षण बाद ही एक विस्फोट होने से ध्वस्त हो गई। इस दुर्घटना के कारणों की जांच करने के लिए जो समिति बनाई गई, नील उसके उप-प्रमुख थे।

जुलाई १९९४ में अमेरिका भर में लोगों ने मानव के चन्द्रमा पर उतरने की पच्चीसवीं वर्षगाँठ बड़े उत्साह से मनाई। लेकिन नील आर्मस्ट्रांग ने किसी भी राजकीय कार्यक्रम में भाग नहीं लिया। वे एक स्थानीय एयर शो में अवश्य सम्मिलित हुए। जब एक विमान उनके ऊपर से उड़ान भर रहा था, किसी ने उन्हें कहते सुना, "काश, मैं वहां ऊपर होता।"

सैटर्न ५

विशालकाय सैटर्न ५ राकेट ही वह राकेट था जो अपोलो ११ के यात्रियों को अंतरिक्ष में ले गया था।

सैटर्न ५ को तीन चरणों में बनाया गया था, और अपोलो ११ यान इसके ऊपर सवार था। यह राकेट ६८.७ फुट ऊंचा था, और इसका वज़न लगभग ३२०० टन था। यह विश्व एक अब तक का सबसे बड़ा राकेट था।

उड़ान भरने के बाद ढाई मिनट तक इसके प्रथम चरण के इंजिनों ने काम किया, और इसे ३७ मील की ऊँचाई तक उठाया। इसके बाद ये प्रथम चरण के राकेट अलग होकर प्रशांत महासागर में गिर गए।

फिर दूसरे चरण के इंजनों ने छः मिनट तक काम किया, और राकेट को ११५ मील की ऊँचाई तक ले गए, जहां इसकी गति १५५०० मील प्रति घंटा हो चुकी थी। फिर दूसरे चरण के यह इंजन भी अलग होकर गिर गए।

तीसरे चरण के इंजन ने अपोलो ११ को १७४०० मील प्रति घंटा की गति देकर उसे पृथ्वी की परिक्रमा करने वाली कक्षा में स्थापित कर दिया। कई बार पृथ्वी की परिक्रमा करने के बाद ये इंजन फिर चालू हुए, और यान को २४००० मील प्रति घंटा की गति प्रदान कर दी। इससे अपोलो ११ चन्द्रमा की ओर अपने यात्रा-पथ पर दौड़ चला।

अपोलो ११ का कमांड मॉड्यूल ही मात्र एक ऐसा हिस्सा था जो तीनों अंतरिक्ष यात्रियों समेत पृथ्वी पर वापस पहुँचा। यह एक पैराशूट की सहायता से एक छपाके के साथ प्रशांत महासागर में जा उतरा।

कुछ महत्वपूर्ण तारीखें

१९३० : ५ अगस्त को नील आर्मस्ट्रांग का जन्म।

१९३६ : नील की पहली विमान यात्रा, और उड़ान भरने के प्रति उसके सम्मोहन की शुरुआत।

१९४६ : उसकी सोलहवीं वार्षगांठ पर नील को पायलट के लाइसेंस की प्राप्ति, जबकि कार चलाने के लाइसेंस उसे अभी नहीं मिला था।

१९४७ : नील ने हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसे नेवी की छात्रवृत्ति का मिलना, और विमानन इंजीनियरिंग पढ़ने के लिए उसका पर्ड्यू विश्विद्यालय को प्रस्थान।

१९४९ : नेवी द्वारा नील को कोरिया युद्ध में भाग लेने के लिए प्रशिक्षण पर भेजना।

१९५०-१९५३ : सुदूर पूर्व में अमेरिका के उन्नीस अन्य देशों के विरूद्ध हुए कोरिया युद्ध में घमासान। नील को एक लड़ाकू वैमानिक के नाते कोरिया भेजा जाना, और उसके शानदार प्रदर्शन के लिए उसका तीन वायुसेना मेडलों से सम्मान।

१९५२ : नील की अमेरिका वापसी, और पर्ड्यू में उसके अध्ययन का पुनः प्रारम्भ।

१९५५ : नील की शिक्षा का समापन और उसे पर्ड्यू से विज्ञान में स्नातक डिग्री का मिलना। उसने एक रिसर्च पायलट के रूप में काम करना प्रारम्भ किया।

१९५६ : २८ जनवरी को नील का जेन शियरडन के विवाह।

१९५७ : सोवियत उपग्रह स्पुतनिक १ के प्रक्षेपण के बाद रूस और अमेरिका के बीच अंतरिक्ष स्पर्धा की शुरुआत।

१९६१ : रूस के यूरी गागारिन अंतरिक्ष में जाने वाले पहले यात्री बने।

१९६२ : एक अंतरिक्ष यात्री बनने के लिए नील का चुनाव। उसका अपने परिवार के साथ ह्यूस्टन, टेक्सास को प्रस्थान। उसका प्रशिक्षण और अंतरिक्ष योजनाओं पर उसके कार्य का प्रारम्भ।

१९६६ : नील को जैमिनी ८ अंतरिक्ष मिशन का कमांडर बनाया गया। यह पहला ऐसा अंतरिक्ष यान था जिसे अंतरिक्ष में एक अन्य राकेट से जोड़ा गया। इस प्रक्रिया को "डॉकिंग" कहते हैं।

१९६९ : १६ जुलाई को अपोलो ११ का प्रक्षेपण। २० जुलाई को नील चन्द्रमा पर कदम रखने वाले पहले व्यक्ति बने। उनके पीछे पीछे थे बज़ एल्ड्रिन।

१९७१ : नासा को छोड़ कर नील ने सिनसिनाटी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर का पद ग्रहण कर लिया। उन्होंने लेबनान, ओहायो के निकट एक फार्म भी ख़रीदा।

१९७८ : नील को अमेरिकन कांग्रेस द्वारा अंतरिक्ष मैडल से सम्मानित किया गया।

१९७९-१९८२ : नील द्वारा सिनसिनाटी विश्वविद्यालय के पद का त्याग, और विभिन्न कंपनियों के संचालक मंडलों में पदभार संभाला।

१९८४ : नील राष्ट्रीय अंतरिक्ष कमीशन में कार्यरत हुए।

१९८६ : स्पेस शटल चैलेंजर में उड़ान भरने के तुरंत बाद विस्फोट, और सभी सात अंतरिक्ष यात्रियों की मृत्यु। नील की इस दुर्घटना के जाँच कमीशन में भागीदारी।

१९९४ : चन्द्रमा पर पहला कदम रखने की बीसवीं वर्षगांठ पर पूरे अमेरिका में ज़ोरदार समारोह आयोजित, लेकिन नील ने इनमें भाग नहीं लिया।

१९९८ : अमेरिकन अंतरिक्ष यात्री जॉन ग्लेन स्पेस शटल पर एक बार फिर अंतरिक्ष में गए। सतत्तर वर्ष की आयु में अंतरिक्ष यात्रा करके वे ऐसा करने वाले सर्वाधिक आयु वाले व्यक्ति बने।